International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 3, March- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

''विभिन्न व्यवसायों में कार्यरत महिलाओं के नेतृत्व गुणों का अध्ययन।''

डॉ. रितु शर्मा (प्राचार्य)
सिद्धार्थ कॉलेज ऑफ एज्यूकेशन, बीलवा
सांगानेर जयपुर

ABSTRACT

महिलाओं में सशक्तिकरण से नेतृत्वगुण होने से स्त्री समाज में सुरक्षा की भावना बढ़ी है। जिन लोगों को स्त्री की कार्यक्षमता, उनकी नेतृत्व क्षमता में अविश्वास था वे भी अब उनकी योग्यता के कायल होने लगे हैं। इसलिए महिलाओं में नेतृत्व गुणों का अध्ययन करना एवं प्रशिक्षित करना अनिवार्य हो जाता है इसलिए प्रस्तुत शोध का प्रमुख उद्देश्य विभिन्न व्यवसायों में कार्यरत महिलाओं में नेतृत्व गुणों का तुलनात्मक अध्ययन करना और पता लगाना कि किस क्षेत्र की महिलाओं में नेतृत्व गुण अधिक सशक्त हैं? निर्धारित शून्य परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु मध्यमान, प्रमाप विचलन और क्रांतिक अनुपात मान की गणना की गई। प्रत्येक व्यवसाय (कानून, चिकित्सा और अध्यापन) में कार्यरत 300-300 महिलाओं पर नेतृत्व प्राथमिकता मापनी (1991)(एल.आई.भूषण द्वारा निर्मित) को प्रशासित किया गया। शोध की मुख्य सम्प्राप्तियों में पाया कि अध्यापन एवं चिकित्या क्षेत्र में कार्यरत महिलायें, कानून के व्यवसाय में कार्यरत महिलाओं की तुलना प्रजातान्त्रिक प्रवृत्ति एवं सशक्त नेतृत्व गुणों की होती है। नेतृत्व गुणों का प्रजातांत्रिक होना किसी समाज के लिए एक शुभ संकेत हैं।

मुख्य शब्दावली : नेतृत्व गुण, प्रजातांत्रिक प्रवृत्ति, कानून, चिकित्सा, और अध्यापन व्यवसाय।

प्रस्तावना

आज की शिक्षित नारी पुरुष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चल सकती है, वह भी समाज की महत्त्वपूर्ण नागरिक है, उसे भी पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त हैं, वह माता है, परन्तु इसके साथ एक शिक्षिका, एक डॉक्टर, इंजीनियर, पायलट, राष्ट्रपति, मंत्री तथा प्रधानमंत्री बनने की योग्यता रखती है। यही कारण है कि शिक्षा, चिकित्सा के क्षेत्र में ही नहीं पुलिस बैंकिंग, कानून, इंजीनियरिंग, पत्रकारिता, होटलिंग जैसे क्षेत्रों में भी महिलाएं कार्य कर रही हैं। वह सफलतापूर्वक नेतृत्व प्रदान कर रही है। एक महिला डॉक्टर केवल पैसे कमाकर घर नहीं लाती अपितु रोगियों को मौत के मुँह से निकालकर नव जीवन भी प्रदान करती है इसी प्रकार एक शिक्षिका, वकील, इन्स्पेक्टर नारी देश के निर्माण में जो भूमिका प्रस्तुत कर रही है उसे कोई नकार नहीं सकता।

यह इस बात का प्रमाण है कि महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ा है और उन्होंने अपनी योग्यताओं को समझा है वे तकनीकी क्षेत्रों की बारीकियों को भी समझने लगी हैं। पुलिस विभाग में महिलाओं को सशक्त नेतृत्वगुण से स्त्री समाज में सुरक्षा की भावना बढ़ी है। जिन लोगों को स्त्री की कार्यक्षमता, उनकी नेतृत्व क्षमता में अविश्वास था वे भी अब उनकी योग्यता के कायल होने लगे हैं। यही कारण है कि नौकरीपेशा पुरुषों और स्त्रियों के वेतनमानों में कहीं कोई अन्तर नहीं दिखाई देता है। कुछ व्यवसायों में स्त्रियां जितनी कुशलता से कार्य कर रही हैं उतनी कुशलता से पुरुष उस काम को नहीं कर पाते। शिशु विद्यालयों में प्रायः शिक्षिकाएं होती हैं। अस्पतालों में रोगियों के लिए महिला नर्सों की ही नियुक्तियां होती हैं। महिला रोगों का इलाज महिला डॉक्टर और महिला सम्बन्धी कानूनी समस्याओं का समाधान महिला वकील अधिक कुशलता से कर सकती है।

शिक्षा से नारी की विचारधारा में परिवर्तन आया है अब वह अपने क्रियाकलापों के तौर तरीकों में अधिकाधिक स्वतन्त्र होना चाहती है, नारी शिक्षा ने एक ओर नारी की प्रगति के नए सोपान तैयार किये है तो दूसरी ओर नारी की भूमिका में बदलाव भी आया है। इस बदलाव ने कई नई समस्याओं को जन्म भी दिया है। एक ओर तो महिलाओं के क्रियाकलापों का परिदृश्य व्यापक हुआ। दूसारी ओर वह मात्र गृहिणी नहीं जिससे नये प्रकार के मानसिक और शारीरिक तनाव बढ़े। यदि हम विभिन्न व्यवसायों में कार्यरत महिलाओं में नेतृत्व गुण का अध्ययन करे तो स्पष्ट हो जायेगा कि महिलाएँ नेतृत्व प्रदान करने की क्षमता रखती हैं, किन्तु कानून क्षेत्र में कार्यरत महिला में इस गुण का विकास जितना भली भांति होगा उतना महिला चिकित्सक व अध्यापिका में नहीं होगा।

कानून क्षेत्र में भावात्मक दृढता के गुण अधिक होगे और उन गुणों में से वे भी हैं, जो किसी को नेतृत्व प्रदान करने के योग्य बनाते हैं और महिला वकील में अपने व्यवसाय के प्रभावस्वरूप स्वतः ही इन गुणों का विकास हो जाता है।

शोधकर्त्री अपने अध्ययन का औचित्य इस दृष्टि से भी समझ रही है कि समाज के अनेक प्रतिष्ठित व्यवसायों में नारी की सहभागिता तो है परन्तु वह केवल अर्थोपार्जन तक सीमित है या उसके व्यक्तित्व में उस व्यवसाय की प्रतिबद्धात्मकता भी निरूपित हो रही है। उसे यह भी जानना औचित्यपूर्ण लगा कि इन व्यवसायों की महिलाओं का उपयोग अर्थोपार्जन कर केवल घर गृहस्थी एवं परिवार के दबाव को कम करना तो नहीं है? ये सभी ऐसे स्वतन्त्र प्रश्न है। जिनका उत्तर शोधकर्त्री की जिज्ञासा को शान्त करने में औचित्यपूर्ण प्रतीत हो रहे है अन्यथा महिलाओं के व्यवसाय या शोध में निहित सभी चरों पर अनेक अन्य शोध हुए हैं, फिर एक और शोध की सार्थकता क्या रह जाएगी? इन मौलिक संकल्पों के परिप्रेक्ष्य में शोधकर्त्री ने शोध का औचित्य एवं महत्व प्रतिपादित किया है।

समस्या कथन

प्रस्तुत विषय का शोधकार्य हेतु चयन इसलिए भी उचित है कि वर्तमान समय में बदलते परिवेश में महिलाएँ हर क्षेत्र में कार्यरत है, महिलाओं के व्यवसाय भिन्न-2 है अतः विभिन्न व्यावसायों में कार्यरत महिलाएँ अपने व्यवसायों के द्वारा अपने परिवार व समाज के विकास में क्या योगदान दे रही हैं? इन तथ्यों का अध्ययन प्रस्तुत शोधकार्य में करने का प्रयास अनुसंधानकर्त्री द्वारा किया गया। प्रस्तुत अनुसंधान कार्य को निम्नलिखित शीर्षक के अन्तर्गत सम्पन्न किया गया है, **''विभिन्न व्यवसायों में कार्यरत महिलाओं के नेतृत्व गुणों का अध्ययन।''**

अध्ययन के उद्देश्य

1. अध्यापन व कानून क्षेत्र के व्यवसायों में कार्यरत महिलाओं के नेतृत्व गुणों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. कानून व चिकित्सा क्षेत्र के व्यवसायों में कार्यरत महिलाओं के नेतृत्व गुणों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. चिकित्सा व अध्यापन क्षेत्र के व्यवसायों में कार्यरत महिलाओं के नेतृत्व गुणों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं

1. अध्यापन व कानून क्षेत्र के व्यवसायों में कार्यरत महिलाओं के नेतृत्व गुणों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. कानून व चिकित्सा क्षेत्र के व्यवसायों में कार्यरत महिलाओं के नेतृत्व गुणों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. चिकित्सा व अध्यापन क्षेत्र के व्यवसायों में कार्यरत महिलाओं के नेतृत्व गुणों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन का परिसीमन

1- प्रस्तुत शोधकार्य राजस्थान राज्य के केवल तीन संभागों बीकानेर, जयपुर एवं अजमेर तक सीमित है।

2- प्रत्येक संभाग से महिला चिकित्सकों, महिला वकीलों व अध्यापिकाओं को शोध समान रूप से न्यादर्श में लिया गया है।

3- कुल 900 महिला कर्मियों को चयनित किया गया है। बीकानेर संभाग की महिला चिकित्सक, महिला वकील व अध्यापिका क्रमशः 100+100+100 कुल 300, इसी अनुपात में जयपुर व अजमेर संभाग की व्यवसायरत महिलाओं का चयन किया गया है।

शोध विधि :- प्रस्तुत अध्ययन में अनुसंधान की विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया है। यह अनुसंधान की वैज्ञानिक विधि है इसके द्वारा एकत्रित दत्त प्रामाणिक एवं विश्वसनीय माने जाते हैं। सर्वेक्षण अध्ययन प्रमुखतः घटनाओं, चरों एवं विशेषताओं की वर्तमान स्थिति का वर्णन करते हैं।

न्यादर्श :- प्रस्तुत अध्ययन हेतु कुल 900 विभिन्न व्यवसायों से जुडी महिलाओं को न्यादर्श में लिए गए हैं। जिनमें अध्यापिकाएं (300), वकील (300) एवं चिकित्सक (300) हैं इन महिलाओं का चयन राजस्थान से यादृच्छिक विधि से किया गया है। अध्ययन हेतु बीकानेर, जयपुर, अजमेर संभाग लिए गए हैं।

न्यादर्श चयन विधि

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा यादृच्छिक प्रतिचयन न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया है। ऐसा इसलिए किया गया है कि कोई पक्षपात न हो।

प्रयुक्त उपकरणों के नाम

क्र.स.	उपकरण का नाम	निर्माता
1.	नेतृत्व प्राथमिकता मापनी (1991)	एल.आई. भूषण

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ

1- मध्यमान (Mean)

2- मानक विचलन (S. D.)

3- क्रांतिक अनुपात eku (C.R. Value)

समंकों का सारणीयन एवं विश्लेषण

4.1 अध्यापन व कानून के व्यवसायों में कार्यरत महिलाओं के नेतृत्व गुण के मध्यमानों के अन्तरों की सार्थकता की तुलना करना।

तालिका संख्या - 1

महिलाओं के व्यवसाय	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात मान	सार्थकता के स्तर	
					.05 स्तर	.01 स्तर
अध्यापन	300	104.61	13.86	7.67		सार्थक अन्तर है।
कानून	300	98.02	5.45			

(df=300+300-2=598)

उपरोक्त तालिका में मध्यमानों तथा मानक विचलनों के आधार पर क्रांतिक अनुपात मान (CR-Value) 7.67 प्राप्त हुआ है। स्वतंत्रता के अंश 598 (df) पर प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान विश्वास के दोनों स्तरों (0.05 तथा 0.01) पर क्रांतिक अनुपात के सारणी मान क्रमशः 1.96 तथा 2.59 से अधिक है। अतः निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि अध्यापन व कानून के व्यवसायों में कार्यरत महिलाओं के नेतृत्व गुण में सार्थक अन्तर है। तालिका में दिए गए दोनों समूह के मध्यमानों का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि अध्यापन में कार्यरत महिलाओं में नेतृत्व गुण कानून के व्यवसाय में कार्यरत महिलाओं की तुलना में अधिक है।

कानून व चिकित्सा के व्यवसायों में कार्यरत महिलाओं के नेतृत्व गुण के मध्यमानों के अन्तरों की सार्थकता की तुलना करना।

तालिका संख्या - 2

महिलाओं के व्यवसाय	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात मान	सार्थकता के स्तर	
					.05 स्तर	.01 स्तर
कानून	300	98.02	5.45	3.878		सार्थक अन्तर है।
चिकित्सा	300	99.63	4.76			

(df=300+300-2=598)

उपर्युक्त तालिका में मध्यमानों तथा मानक विचलनों के आधार पर क्रांतिक अनुपात मान (CR-Value) 3.878 प्राप्त हुआ है। स्वतंत्रता के अंश 598 (df) पर प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान विश्वास के दोनों स्तरों (0.05 तथा 0.01) पर क्रांतिक अनुपात के सारणी मान क्रमशः 1.96 तथा 2.59 से अधिक है। अतः निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि कानून व चिकित्सा के व्यवसायों में कार्यरत महिलाओं के नेतृत्व गुण में सार्थक अन्तर है। तालिका में दिए गए दोनों समूह के मध्यमानों का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि चिकित्सा में कार्यरत महिलाओं में नेतृत्व गुण कानून के व्यवसाय में कार्यरत महिलाओं की तुलना में अधिक है।

चिकित्सा व अध्यापन के व्यवसायों में कार्यरत महिलाओं के नेतृत्व गुण के मध्यमानों के अन्तरों की सार्थकता की तुलना करना।

तालिका संख्या - 3

महिलाओं के व्यवसाय	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात मान	सार्थकता के स्तर	
					.05 स्तर	.01 स्तर
चिकित्सा	300	99.63	4.76	5.894		सार्थक अन्तर है।
अध्यापन	300	104.61	13.86			

(df=300+300-2=598)

उपर्युक्त तालिका में मध्यमानों तथा मानक विचलनों के आधार पर क्रांतिक अनुपात मान (CR-Value) 5.984 प्राप्त हुआ है। स्वतंत्रता के अंश 598 (df) पर प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान विश्वास के दोनों स्तरों (0.05 तथा 0.01) पर क्रांतिक अनुपात के सारणी मान क्रमशः 1.96 तथा 2.59 से अधिक है। अतः निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि चिकित्सा व अध्यापन के व्यवसायों में कार्यरत महिलाओं के नेतृत्व गुण में सार्थक अन्तर है। तालिका में दिए गए दोनों समूह के मध्यमानों का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि अध्यापन के व्यवसाय में कार्यरत महिलाओं में नेतृत्व गुण चिकित्सा के व्यवसाय में कार्यरत महिलाओं की तुलना में अधिक है।

निष्कर्ष

1- अध्यापन व कानून के व्यवसायों में कार्यरत महिलाओं के नेतृत्व गुण में सार्थक अन्तर पाया गया और अध्यापन के व्यवसाय में कार्यरत महिलाओं में, कानून के व्यवसाय में कार्यरत महिलाओं की तुलना में प्रजातान्त्रिक नेतृत्व गुण पाये गये। अर्थात् अध्यापन में कार्यरत महिलायें, कानून के व्यावसाय में कार्यरत महिलाओं की तुलना प्रजातान्त्रिक प्रवृत्ति की होती है। जैसा कि परिकल्पना 1 के परिणाम में पाया गया।

2- कानून व चिकित्सा के व्यवसायों में कार्यरत महिलाओं के नेतृत्व गुण में सार्थक अन्तर पाया गया और चिकित्सा में कार्यरत महिलाओं में नेतृत्व गुण अपेक्षाकृत कानून के व्यवसाय में कार्यरत महिलाओं की तुलना में अधिक है। अर्थात् चिकित्सा में कार्यरत महिलायें, कानून के व्यवसाय में कार्यरत महिलाओं की तुलना में प्रजातान्त्रिक प्रवृत्ति की होती हैं। जैसा कि परिकल्पना 2 के परिणाम में पाया गया।

3- चिकित्सा व अध्यापन के व्यवसायों में कार्यरत महिलाओं के नेतृत्व गुण में सार्थक अन्तर पाया गया और अध्यापन में कार्यरत महिलाओं में नेतृत्व गुण अपेक्षाकृत चिकित्सा के व्यवसाय में कार्यरत महिलाओं की तुलना में अधिक है अर्थात् चिकित्सा में कार्यरत महिलायें, अध्यापन के व्यवसाय में कार्यरत महिलाओं की तुलना में कम प्रजातान्त्रिक प्रवृत्ति की पाई गयी। जैसा कि परिकल्पना 3 के परिणाम में पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुप्ता,अल्पना सेन :'दी स्टोरी ऑफ विमेन ऑफ इण्डिया', (1974) न्यू देहली, इण्डियन बुक कम्पनी, 1974

2. चौबे हरफूल प्रसाद एवं चौबे, अखिलेश : सामाजिक समस्यायें : नारी शिक्षा एवं अन्य' ईगल बुक्स इण्टरनेशनल, पो. बॉक्स नं. 64, बी.सी. बाजार, मेरठ, पृ.सं. 50(1998)

3. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, भारतीय इंस्टीट्यूट ऑफ रिसर्च, लखनऊ जनवरी–जून 2008, वर्ष–27, अंक–1, पृ.सं. 53–56

4. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका भारतीय इंस्टीट्यूट ऑफ रिसर्च, लखनऊ वर्ष 27 अंक–1, जनवरी –जून 2008 पेज – 99–103

5. रामप्रकाश : नारी और नौकरी', (1995)दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली निबन्ध संचयन, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली, पृ. 13,

6. राष्ट्रदूत, 'शक्ति का नाम ही नारी', राष्ट्रीय साप्ताहिक सुधर्म, चमेली वाला मार्केट, एम.आई.रोड, जयपुर 8 मार्च, 2010

7. महिला शिक्षा (फरवरी, 2009) : ''महिलाओं के बिना समाज की प्रगति सम्भव नहीं', स्वामी प्रकाशन, अंक 9, वर्ष –2, मुद्रक नरेश जैन, 446, विनोबा बस्ती प्रिन्टर्स 125, गोल बाजार, श्री गंगानगर

8. बढ़ने लगा महिलाओं का वर्चस्व', महिला शिक्षा स्तर, 2008 अंक 2, वर्ष 3,पृ. 9

9. शिविरा पत्रिका, मोदी अनिताः 'महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण', बीकानेर। मार्च 2009, वर्ष 49, अंक 9, बीकानेर।

10. शैक्षिक त्रैमासिक शोध पत्रिका, सोनकर अंजना- ''शिक्षा चिंतन'', त्रिमूर्ति संस्थान, कानपुर (अप्रैल-जून), (2009), पृष्ठ–36

11. श्रीवास्तव जे.पी. एवं मित्तल एम.एल.:'आधुनिक भारतीय शिक्षा' (1991) ईगल बुक इण्टरनेशनल, मेरठ, पृ.सं. 24

12. Leadership June 2010 Vol.10 issue 4, pp-31-38

13. Leadership tracks MSL_201_L109 pp-12-25

14. Leadership Quarterly (2010) Vol.-IV Dec.10 pp-1-45

15. The Journal of International Management Studies, August2010 Volume-3, No.-2 pp 1-9

16. Teacher Today, Director of Secondary Education, Rajasthan Bikaner Jan-March2010 pp-29-33